कथा सरिता

बेशकीमती तोहफा

एक राजा ने दूसरे राजा के पास एक पत्र और सुरमे की एक छोटी सी डिबिया भेजी। पत्र में लिखा था कि जो सुरमा भिजवा रहा हूं, वह अत्यंत मूल्यवान है। इसे लगाने से अंधापन दूर हो जाता है। राजा सोच में पड़ गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि इसे किस-किस को दे। उसके राज्य में नेत्रहीनों की संख्या अच्छी-खासी थी, पर सुरमे की मात्रा बस इतनी थी, जिससे दो आंखों की रोशनी लौट सके। राजा इसे अपने किसी अत्यंत प्रिय व्यक्ति को देना चाहता था। तभी राजा को अचानक अपने एक वृद्ध मंत्री की स्मृति आई। वह मंत्री बहुत ही बुद्धिमान था, मगर आंखों की रोशनी चले जाने के कारण उसने राजकीय कामकाज से छुट्टी ले ली थी और घर पर ही रहता था। राजा ने सोचा कि उसकी आंखों की ज्योति वापस आ गई तो उसे उस योग्य मंत्री की सेवायें फिर से मिलने लगेंगी। राजा ने मंत्री को बुलवा भेजा और उसे सुरमे की डिबिया देते हुए कहा, 'इस सुरमे को आंखों में डालें। आप पुन: देखने लग जाएंगे। ध्यान रहे यह केवल दो आंखों के लिए है।' मंत्री ने एक आंख में सुरमा डाला। उसकी रोशनी आ गई। उस आंख से मंत्री को सबकुछ दिखने लगा। फिर उसने बचा-खुचा सुरमा अपनी जीभ पर डाल लिया। यह देखकर राजा चकित रह गया। उसने पूछा, 'यह आपने क्या किया? अब तो आपकी एक ही आंख में रोशनी आ पाएगी। लोग आपको काना कहेंगे।' मंत्री ने जवाब दिया, 'राजन, चिंता न करें। मैं काना नहीं रहूंगा। मैं आंख वाला बनकर हज़ारों नेत्रहीनों को रोशनी दूंगा। मैंने चखकर यह जान लिया है कि सुरमा किस चीज़ से बना है। मैं अब स्वयं सुरमा बनाकर नेत्रहीनों को बांटूंगा।' राजा ने मंत्री को गले लगा लिया और कहा, 'यह हमारा सौभाग्य है कि मुझे आप जैसा मंत्री मिला। अगर हर राज्य के मंत्री आप जैसे हो जाएं तो किसी को कोई दु:ख नहीं होगा।

तुम क्यों हारे?

नादिरशाह जब मुहम्मदशाह को करनाल के युद्ध क्षेत्र में परास्त कर दिल्ली पहुंचा, तो उसका शानदार स्वागत किया गया। कुछ देर बाद नादिरशाह ने पानी पीने की मंशा व्यक्त की। मुहम्मदशाह ने संकेत किया कि नादिरशाह की सेवा में पानी हाज़िर किया जाए। लेकिन अफसोस, कि - कोई भी देर तक पानी लेकर नहीं आया।

तभी दूसरी ओर से नगाड़ों व तुरही की आवाज सुनाई पड़ी। नादिरशाह से समझा शायद कोई उत्सव मनाया जा रहा होगा। लेकिन, जब उसने नज़र उठाकर देखा तो सेवकों की भीड़ थालों में स्वर्ण के गिलास, सुराही, पान व पीकदान सजाए चंवर डुलाते चली आ रही थी।

नादिरशाह ने देखा कि यह सारा आडंबर पानी पिलाने के लिए ही किया जा रहा है, तो उसने कहा, 'मुहम्मदशाह! विशाल सेना होने पर भी तुम क्यों हार गए, इसका कारण मेरी समझ में आ गया है।'

इतना कहकर उसने भिश्ती को इशारा किया और वह मशक में पानी भर लाया।

नादिरशाह ने अपना टोप उतारकर मशक से एक गिलास पानी भरा और पी गया। वह मुहम्मदशाह से पुन: बोला, - 'यदि हम लोग भी विलासी होते, तो ईरान से भारत कभी नहीं पहुंच पाते।'

राजा के गाना जीवन का रहस्य

एक राजा हमेशा तनावग्रस्त रहता था। कभी वह पड़ोसी राज्यों के आक्रमण की आशंका से भयभीत रहता, तो कभी अपने ही लोगों द्वारा षड्यंत्र रचे जाने के अंदेशे से तनावग्रस्त रहता। उसे न नींद आती और न वह भोजन ठीक से कर पाता था। जब वह शाही बाग के माली को देखता तो उसे बड़ी ईर्ष्या होती थी, क्योंकि वह बड़ी शान्ति तथा आनंद से चटनी के साथ रोटी खाता और रात को भरपूर नींद सोता था। एक दिन राजा ने अपनी समस्या राजगुरु के समक्ष रखी। उन्होंने कहा, 'राजन! तुम राजपाट अपने पुत्र को सौंप दो' राजा बोला, 'किंतु वह तो केवल चार वर्ष का बच्चा है।' राजगुरु ने समाधान दिया, 'तो फिर मुझे राजपाट सौंपकर निश्चिंत हो जाओ।' राजा ने ऐसा ही किया। राजा ने राजकोष से धन लेकर व्यापार की इच्छा जताई तो राजगुरु ने कहा, अब यह राजकोष मेरा है। तुम इसमें से धन नहीं ले सकते। अन्य राज्य में नौकरी करने की तैयारी दिखाई तो राजगुरु बोले, 'मेरे ही राज्य में नौकरी कर लो। मैं तो आश्रम में ही रहूंगा। तुम मेरे कर्मचारी के रूप में राज-काज करो और महल में ही रहो।' राजा पहले की तरह राजपाट चलाने लगा। कुछ समय बाद राजगुरु आए तो उन्होंने कर्मचारी की तरह नीचे खड़े राजा से पूछा, 'तुम्हारी भूख व नींद के क्या हाल हैं?' राजा ने कहा, 'अब भूख भी लगती है और नींद भी खूब आती है।' तब राजगुरु ने समझाया, 'देखो, सब कुछ पहले जैसा है। फर्क यह है कि पहले तुमने काम को स्वयं पर लाद रखा था और अब इसे अपना कर्तव्य समझकर कर रहे हो। याद रखो, 'जीवन को सही ढ़ंग से जीने के लिए काम को बोझ नहीं, कर्तव्य समझकर करना चाहिए।' राजा को नई दृष्टि मिल गई। प्रत्येक काम को कर्तव्य समझकर करने पर चिन्ता व तनाव से मुक्ति पाई जा सकती है।

संतोषम् परम् सुखम्

मैंने आज एक सुंदर महिला को बस में देखा और ईश्वर से प्रार्थना की कि मैं उसकी तरह सुंदर हो जाऊं। जब वह सुंदरी जाने को हुई तो मैंने देखा कि उसका एक पैर नहीं था, वह बैसाखी के सहारे चल रही थी। जाते समय वह मुस्कुराई। मैं कुछ देर स्तब्ध सोचती रही, हे ईश्वर मुझे मेरी प्रार्थना के लिए माफ कर देना, आपने मुझे दो पैर दिए हैं, ऐसा लग रहा है मानो पूरा संसार मेरा है। इसी उधेड़बुन में कुछ दूर ही चली थी कि मुझे दुकान दिखाई दी, जहाँ एक लड़का बड़े ही उत्साह से टॉफियां बेच रहा था। मैं टॉफी खरीदने के लिए रुकी। मुझे कहीं जाने की जल्दी नहीं थी तो मैंने आराम से उससे बात की। मेरी बातचीत से वह बहुत खुश हो गया। जब मैं जाने के लिए मुड़ी तो उसने मुझे कहा 'धन्यवाद आप बहुत दयालु हैं, आप जैसे लोगों से बात करके बहुत खुशी होती है, आप देख ही रही हैं कि मैं नेत्रहीन हूं।' मैं समझ नहीं पाई कि मैं क्या जवाब दूं इस बात का। किसी तरह से खुद को संयत किया और वहां से निकली। मैंने ईश्वर को दो आंखें देने के लिए धन्यवाद दिया।

मैं सड़क पर चल रही थी कि मैंने एक बच्चे को देखा, जिसे मैं जानती थी। वह वहां पर खड़ा होकर सामने खेल रहे बच्चों को देख रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या करे। मैं एक मिनट के लिए रुकी, फिर उससे कहा, 'तुम उनके साथ खेलते क्यों नहीं', वह बिना कुछ कहे सामने देखता रहा। मैं भूल गई थी कि वह बच्चा सुन नहीं सकता। हे ईश्वर मुझे क्षमा करना, मैं बहुत खुशकिस्मत हूं जो मेरे पास दो कान भी हैं।

नाते पुते -महा.। गणेश उत्सव मंडल में विद्यार्थियों व पुलिस कर्मियों को परमात्मा का परिचय देते हुए ब्र.कु.जयश्री।

दिल्ली-पालम विहार। एच.आई.पी.ए में 'कॉन्करिंग स्ट्रेस' पर लेक्चर देते हुए ब्र.कु.उर्मिल तथा उन्हें ध्यान से सुनते हुए सभी एस.एच.ओ तथा पुलिस इंस्पेक्टर्स।

पाओंता साहेब -हिमाचल प्रदेश। होली मेला पाओंता साहेब में एस.डी.एम. श्रवण कुमार तथा डी.एस.पी.नारवीर सिंह राठौर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुमन।

राँची। राँची। दीपावली कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए चैम्बर कॉमर्स अध्यक्ष विकास सिंह, कार्मिक निदेशक सी.सी.एल.आर.मिश्रा, ब्र.कु.निर्मला, सी.एम.पी.डी.आई महिला समिति अध्यक्षा नीलांजना देवनाथ तथा महाप्रबन्धक सी.सी.एल.आर.एस.महापात्र।

संगमनेर-महा.। महाराष्ट्र के माननीय गृहमंत्री आर.आर.पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीला। साथ हैं ब्र.कु.विष्णु।

सरायपली-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् शासकीय महाविद्यालय के प्रीसिपल अमृत पटेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अहिल्या।

मन्सा सेवा एक.. -पेज 3 का शेष... हर व्यक्ति खुशी से आनंद से जीना चाहता है। जैसे डॉक्टर कई बार कहते हैं, दवाओं के साथ दुआओं की भी आवश्यकता है। आप के शुभ संकल्पों की आवश्यकता है भूखे, प्यासे, पीड़ितों के लिए। भोजन करते समय सदा यह शुभ संकल्प करें कि इस संसार में कोई गरीब न रहे, सबको दो वक्त की रोटी मिले...इतना तो हम कर सकते हैं।

स्वयं के लिए – शुभ संकल्पों की सबसे ज्यादा ज़रूरत है स्वयं के लिए। दूसरों के लिए हम शुभ संकल्प करते हैं लेकिन स्वयं के प्रति हम बहुत गलत सोचते हैं। जैसे कि मैं यह नहीं कर सकता, मेरे तकदीर में ही नहीं है, मैं बहुत कमज़ोर हूँ...हमें स्वयं के लिए शुभ संकल्प करने की आदत डालनी है। जिससे हम सदा खुश रह सकेंगे और हमारा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों ठीक रहेगा।

प्रकृति के लिए – प्रकृति सृष्टि के आदि काल से लेकर अबतक हमारी नि:स्वार्थ रूप में सेवा कर रही है। लेकिन आज इस प्रकृति का भी संतुलन बिगड़ गया है। प्राकृतिक प्रकोप बढ़ते जा रहे हैं। प्रकृति के पाँचों ही तत्व अब तंग हो चुके हैं। तो इस प्रकृति के लिए हमें शुभ संकल्प करना चाहिए ताकि प्रकृति को भी शान्ति मिले और प्रकृति का संतुलन बना रहे।

विश्व कल्याण के लिए शुभ संकल्प

शुभ संकल्पों की आवश्यकता है, हम जिस स्थान पर रहते हैं, जिस समाज, राष्ट्र में...हम रोज़ विश्व कल्याण के लिए शुभ संकल्प करें 'सबका कल्याण हो...सबका भला हो...सब निरोगी बन जायें...कोई गरीब न रहे...सबको सुख शान्ति मिले...सबकी मंगल कामनायें पूर्ण हो जायें...सारे विश्व से दु:ख अशान्ति समाप्त हो जाये...'

इस तरह से मन्सा सेवा की बहुत-बहुत आवश्यकता है। मन्सा सेवा की एक आदत बन जाये तो आप सभी समस्याओं से आपेही छूट जायेंगे।

''जैसा सोचेंगे वैसा बनेंगे, आप सभी के लिए शुभ सोचेंगे तो सभी आप के लिए भी शुभ सोचेंगे।''